

ताजीमी सज्दे के हराम होने
और कुफ़्र व शिर्क न होने के सबूत

ताजीमी साज्दा हराम है

आलाहज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा

www.jannatikaun.com

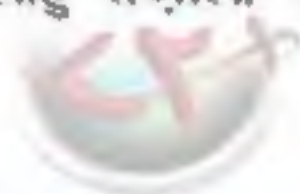
ताज़ीमी सजदे के हराम होने और कुफ़ व शिर्क न होने के
सुबूत में लाजवाब किताब

ताज़ीमी सजदा हराम

मुसन्निफ़

आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

(रदियल्लाहु तआला अन्हु)



JANNATI KAUN?

जदीद तरतीब

मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ हज़ारवी

हिन्दी तर्जमा

जनाब मुहम्मद अहमद उर्फ़ मुहम्मद महताब अली
(M.Sc. CAIIB)

जुमला हुकूक नाशिर के हक में महफूज़ हैं

नाम किताब	:	ताज़ीमी सज्दा करना हराम है
मुसन्निफ	:	आलहज़रत इमाम अहमद रज़ ख़ौ
तरतीब		मौलाना मुहम्मद सिद्दीक हज़ारवी
नाशिर	:	तहसीनी फाउन्डेशन, घक महमूद तहसीनी नगर, पुराना शहर, बरेली शरीफ
सन तबाअत	:	1436 हिजरी मुताबिक 2015



JANNATI KAUN?

पेश लफ्ज

अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फज्जल-ओ-करम और मेरे बुजुर्गों के फैज से यह किताब "अज्जुबदतुज्जकिइयह लितहरीमे सुजूदित्ताहिइयह" जिसका उर्दू नाम "ताजीमी सजदा हराम है" है जो ताजीमी सजदे के हुक्म में है आपके हाथों में है। बहुत अर्से से तमन्ना थी कि आलाहजरत मुजद्दिद दीन-ओ-मिल्लत शाह मुहम्मद अहमद रजा खॉ रदियल्लाहु तआला अन्हु की यह किताब हिन्दी में आए, आज यह तमन्ना पूरी हुई।

इस किताब में ताजीमी सजदा क्या है यह बताया गया है साथ ही यह बताया गया है कि ताजीमी सजदा हराम है कुफ्र या शिर्क हरगिज नहीं, हॉ इबादत की नियत से सजदा अल्लाह तआला के सिवा किसी को भी करना बिला शक व शुबह कुफ्र है इसमें किसी को भी इख्तिलाफ नहीं है।

आज कुछ बदमज्हाब फिरके जैसे वहाबी देवबन्दी यह इल्जाम देते हैं कि सुन्नी मजारात पर सजदा करते हैं और कब्रों को पूजते हैं मआज अल्लाह ऐसा हरगिज हरगिज नहीं। वहाबियों को तो मजारात पर बोसा देना भी शिर्क व कुफ्र नजर आता है, उन्हें तो मजारात और बुजुर्गों से ही चिढ़ है। बहरहाल इस किताब में आलाहजरत ने बड़ी तफसील के साथ तहकीकी तौर पर बयान फरमाया है कि ताजीमी सजदा हराम है कुफ्र व शिर्क नहीं।

इस किताब को हमने अपने तौर पर समझाने की कोशिश की है, हमें लगता तो है हम कामयाब हैं, मगर यह आप ही बता सकते हैं कि हम किस हद तक कामयाब हैं। इसके बाद भी अगर मसअले को समझने में किसी किस्म की दिक्कत आए तो किसी सुन्नी सहीहुल अकीदा आलिम से इस मसअले को अच्छी तरह समझ लें और वहाबियों की बातों में न आये और हमारी तमाम कोशिश के बावजूद इस रिसाले के तर्जमा करने में जो कहीं कोई भी गलती रह गई हो तो हमें इत्तेला जरूर करें ताकि अगले एडीशन में उसे ठीक कर लें।

इस मसअले को ज्यादा से ज्यादा लोगों को ठीक तौर पर समझाने की कोशिश करें, आजकल ईमान के लुटेरे इस मसअले पर भोले भाले मुसलमान भाईयों को बहुत ज्यादा बहकाते हैं और बार बार सुन्नियों पर मजारात को सजदा करने का इल्जाम लगाते हैं । खबरदार होशयार।

मैं जनाब मौलाना हाफिज़ मुहम्मद शकील साहब का बहुत शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने इस रिसाले को आप तक पहुँचाने में मेरी बहुत मदद की, अल्लाह तआला उन्हें दुनिया और आखिरत में बरकतें अता फरमाए और उनसे और भी दीनी खिदमत ले।

आखिर में आप लोगों से दुआ की गुजारिश करना है कि मैं यूँही जिन्दगी भर काम करता रहूँ और इसी पर साथ ईमान के खातिमा हो। आप भी हिन्दी की तसानीफ का इन्तेज़ार न करके उर्दू सीखिए और दीनी मालूमात हासिल कीजिए। आमीन।



मुहम्मद अहमद नूरी

रजब 1422

JANNATI KAUN?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम

लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) यानि अल्लाह के सिवा कोई पूजने के काबिल नहीं मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला के रसूल हैं।

हर मुसलमान जानता है कि यह कलिमए तय्यबा है और इसी पर मजहबे इस्लाम की बुनयाद है जो इसका मानने वाला नहीं वह मुसलमान नहीं और इसका इन्कार करने वाला काफिर है और अगर इसी पर काइम रहा तो हमेशा के लिए जहन्नमी है। अगर कोई भी मुसलमान अपने किसी भी कौल या फेल से इस कलिमे का इन्कार करता है और बगैर तौबा के मर जाता है तो वह दुनिया से काफिर गया और हमेशा के लिए जहन्नम में रहेगा। — इसी तरह से अगर कोई शख्स किसी गैरे खुदा को इबादत या पूजा की नियत से सजदा करे तो वह काफिर हो गया और अगर बिना तौबा के मरा तो जहन्नमी है और ऐसे शख्स को जहन्नमी न समझने वाला भी जहन्नमी है।

आज देखा यह गया है कि कुछ लोग अपने पीर को सजदा करते हैं तो कुछ लोग मजारात को सजदा करते हैं। क्या यह फेल दुरुस्त है? हरगिज नहीं हरगिज नहीं। कुछ लोग इस सजदे को मुबाह व जाएज मानते हैं तो कुछ लोग हराम मानते हैं तो कुछ लोग इसे कुफ्र व शिर्क मानते हैं। आइये देखते हैं कि सजदा किसे कहते हैं यह कितने किस्म के होते हैं और किस सजदे का क्या हुक्म है, पहले की शरीअत में गैरे खुदा के सजदे का क्या हुक्म था मजहबे इस्लाम में क्या हुक्म है। इबादत की नियत से गैरे खुदा को सजदा करना बिला शक व शुबा कुफ्र व शिर्क है इस बात में किसी को इख्तिलाफ नहीं हर मुसलमान इसे मानता है।

ताजीम के तौर पर सजदे का क्या हुक्म है? — इसके जवाब में यह बात बिल्कुल साफ है कि दूसरे नबियों के दौर में यह सजदा जाएज था मगर हमारे और आपके आका ने ताजीम के तौर पर भी सजदे को हराम बताया है। यह बात कुरआन से साबित है कि यूसुफ अलैहिस्सलाम के वालिदेन और भाइयों ने आपको सजदा किया और यह भी कुरआन से साबित है कि फिरिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सजदा किया। हाँ जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से इसी ताजीमन सजदे की इजाजत मांगी गई (यानि ताजीम के तौर पर सजदे की इजाजत मांगी गई) तो आपने इसे हराम फरमाते हुए फरमाया कि खुदा के बाद अगर मैं किसी को सजदे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि अपने शौहर को सजदा करे। यहाँ भी यही ध्यान देने की बात है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) हरगिज हरगिज लाइलाहाइल्लाह के खिलाफ हुक्म न देते बल्कि अगर हुक्म होता तो ताजीमन सजदे का हुक्म होता मगर ऐसा भी न हुआ और आपने ताजीमन सजदे को भी हराम फरमा दिया।

जब किसी सहाबी ने आपसे आपको सजदा करने की इजाजत मांगी (जैस कि आगे आने वाली हदीसों में आयेगा) तो आपने मना फरमा दिया। क्या कोई कह सकता है कि कोई सहाबी लाइलाहइल्लल्लाह के खिलाफ इजाजत मांग रहा था क्या कोई सहाबी इबादत के तौर पर सजदे की इजाजत मांग सकता है हरगिज नहीं हरगिज नहीं। जब भी किसी सहाबी ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से सजदे की इजाजत मांगी तो आपने मना फरमा दिया और ताजीमन सजदे को भी गैरे खुदा (यानि खुदा के आलावा कोई भी) के लिए हराम फरमाया।

मालूम यह हुआ कि सजदे की दो किस्में हैं।

(1) सजदे इबादत (तअब्बुदी सजदा) यानि इबादत के तौर पर सजदा जो सिर्फ अल्लाह तआला के लिए ही किया जाता है और गैरे खुदा को करना कुफ्र व शिर्क है — यह सजदा किसी दौर में भी मखलूक के लिए जाएज नहीं रहा क्योंकि यह उस जात को किया जाता है जो माबूदे हकीकी है और अल्लाह तआला के सिवा किसी को

भी माबूद मानना शिर्क है और यह किसी जमाने में भी जाएज नहीं रहा।

(2) सजदए तहीय्यत (ताजीमी सजदा) यह सजदा हजरते ईसा अलैहिस्सलाम तक मखलूक के लिए जाएज रहा। इस सजदे का मकसद मसजूद इलैह (जिसको सजदा किया जाए) की ताजीम करना है उसको खुदा या माबूद मानना नहीं जैसा कि यूसूफ अलैहिस्सलाम के वालिदैन और भाइयों ने आपको सजदा किया और फरिश्तों ने आदम अलैहिस्सलाम को सजदा किया। लेकिन अब खातमुन्नबियीन हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शरीअत में किसी को भी सजदए ताजीमी जाएज नहीं बल्कि हराम है हों कुफ्र व शिर्क नहीं। (चूँकि इसमें सजदा करने वाले पर कुफ्र या शिर्क का शुबह होता है लिहाजा यह सख्त हराम है)

यहाँ एक बात और बताता चलूँ किसी सजदए ताजीमी के कोई खास शराएत नहीं जबकि सजदए इबादत के कुछ शराएत हैं जैसे सजदा करने वाला बावुजू हो, उसका रुख किब्ले की तरफ हो, उसकी नाक पेशानी जमी हो, वैसे की उंगलियों वगैरह जमीन पर जमा हुआ हो और इन सब के अलावा उसकी नियत भी सही हो यानि अगर सारी शर्तें पाई जायें और सजदा करने वाले की नियत किसी गैर खुदा को सजदा करने की हो तो कुफ्र व शिर्क है और अगर शर्तें पाई जायें मगर गैरे खुदा को सजदे की न हो तो कुफ्र व शिर्क नहीं हों सख्त हराम है। यानि किसी को सजदा करते देख कर यह नहीं कहा जा सकता कि यह सजदए ताजीमी कर रहा है या सजदए इबादत जब तक कि उसकी नियत न मालूम हो ——— लिहाजा किसी को सजदा करते देख कर उसे मुशरिक नहीं कहा जाएगा बल्कि मोमिन के लिए नेक गुमान करते हुए यही कहा जाएगा कि यह सजदए ताजीमी कर रहा है ——— हों यह भी बिना शक व शुबा हराम और सख्त हराम है।

ताजीमी सजदा : बाज जाहिलों और झूटे सूफियों ने अपनी जहालत की बिना पर गैरे खुदा के लिए ताजीमी सजदे को जाएज करार दिया और इसके सुबूत में हजरते आदम व हजरते यूसूफ अलैहिमुस्सलाम के

वाकिआत का हवाला दिया। जबकि बाज दूसरे लोगों ने बिना सोचे समझे सजदे ताजीमी को भी कुफ्र व शिर्क कह दिया। हालांकि दीन का एक छोटा सा तालिबे-इल्म (छात्र) भी जानता है कि शिर्क अल्लाह तआला से बराबरी का नाम है और जब किसी मखलूक को खुदा न समझा जाए तो शिर्क कैसे होगा। इन्हीं सब बातों ने आला हजरत इमाम अहमद रजा रदियल्लाहु तआला अन्हु को हक साबित करने की तरफ मुतवज्जेह किया और आपने इस मौजू पर एक रिसाला मुबारका **“अलजुबदतुज्जकिय्या फी तहरीमे सुजूदित्ताहिय्या”** के नाम से मुरत्तब फरमाया।

आला हजरत इमाम अहमद रजा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस मौजू पर कलम उठाया और कुरआने पाक की एक आयत और चालीस अहादीसे मुबारका और एक सौ दस फिक्ही नुसूस से इस्तिदलाल (दलीलें पेश करना) करते हुए साबित किया है कि गैरे खुदा को सजदे इबादत हमेशा से हराम और शिर्क रहा है और अब भी इस का हुक्म यही है जबकि ताजीमी सजदा हराम है और इतना शदीद हराम कि कुफ्र के करीब है। **JANNATI KAUN?**

आयते मुबारका

ताजीमी सजदे के हराम होने के सबूत में आला हजरत इमाम अहमद रजा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इस आयत से इस्तिदलाल किया है। इरशादे खुदावन्दी है :-

तर्जमा : और न तुम्हें यह हुक्म देगा कि फिरिस्तों और पैगम्बरों को खुदा तहरा लो क्या तुम्हें कुफ्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो।

ولا يأمرکم ان تتخذوا الملائكة

والنبيين ارباباً یا امرکم بالکفر

بعد اذ انتم مسلمين (پ ۲ ع ۱۶)

इस आयत की तफसीर में तफसीर करने वालों ने शाने नुजूल के हवाले से बताया कि एक सहाबी ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आपको सजदा करने की इजाजत मांगी तो आपने उनको मना फरमाया। इस मौके पर यह आयते करीमा नाजिल हुई।

चुनांचे इस आयत की रू से नबीए करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और दूसरे इन्सानों बल्कि तमाम मखलूक के लिए सजदा करने की मुमानअत कर दी गई।

बाज मुफस्सरीन (तफसीर करने वाले आलिम) ने बताया कि इस आयत में नजरान (जगह का नाम) के ईसाइयों का रद है जिनका दावा था कि हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें हुक्म दिया कि वह उनको अपना रब तसलीम करें। कुछ मुफस्सरीने किराम के अक़्वाल यह है :-

हजरते हसन बसरी रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं

मुझे हदीस पहुँची है कि एक सहाबी ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! हम हुजूर को भी ऐसे ही सलाम करते हैं जैसे आपस में करते हैं क्या हम हुजूर को सजदा न करें। आपने फरमाया "न" बल्कि अपने नबी की ताजीम करो सजदा खास हक खुदा का है इसी लिए अल्लाह तआला के सिवा किसी को सजदा सजावार (लाइक) नहीं। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत (जो ऊपर गुजरी) उतारी। अलइकलील फी इस्तिबातिन्नजील में है इस आयत से साबित हुआ कि गैरे खुदा को सजदा हराम है।

तफसीरे जलालैन में है कि यह आयत उस वक्त नाजिल हुई जब नजरान के ईसाइयों ने कहा कि हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने उनको हुक्म दिया है कि वह उन्हें रब माने या जब नाजिल हुई कि जब बाज मुसलमानों ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा करने का मुतालबा किया।

इसके अलावा तफसीर बैजावी, मदरिक, अबुरसऊद, कश्शाक, तफसीरे कबीर, शहाब और तफसीरे जुमुल में मुफस्सरीन हजरात ने इसी तफसीर की ताईद (हिमायत) की है कि पहले सबब पर दूसरे को तरजीह (वरीयता) दी कि मुसलमानों ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदे की दरख्वास्त की इस पर आयत उतारी — खुद आयत के आखिर में जो फरमाया गया कि "क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो।" यह इस बात की दलील है कि वह मुसलमान ही यहाँ पर मुराद हैं जो सजदे के

ख्वाहिशमन्द थे, ईसाई मुराद नहीं है। (यानि जाहिर यह है कि यह बात अल्लाह तआला ने ईसाईयों से न कह कर मुसलमानों से कही है और मुसलमानों को गैरे खुदा को सजदा करने से मना किया गया है आगे यह भी आता है कि यह कौन से सजदे को मना किया गया है सजदए इबादत या सजदए ताजीमी)

तफसीर मदरिक व कश्शाक में है :-

तर्जमा "बाद इस है कि तुम मुसलमान हो" के अलफाज से यह साबित हुआ कि मुसलमान ही मुख्तब है और यह वह लोग हैं जिन्होंने आपसे इजाजत मागी कि आपको सजदा किया जाए।

तफसीरे बैजावी में है :-

यह इस बात की दलील है कि मुसलमानों ही को खिताब है और उन्होंने ही आपको सजदे को इजाजत मागी थी।

तफसीरे कबीर में कश्शाक का कौल नकल करके इसे साबित व मुकरर रखा है (यानि तफसीरे कबीर में भी यही साबित है)

फुतुहात में है :-

आगत के आखिर में 'बाद इस है कि तुम मुसलमान हो' के अलफाज इस एहतामाल (कम शक) के करीब है।

इनायतुल काजी में है :-

यह कजाहत (उनका मुसलमान होना) इस कौल को तर जीह देता है कि यह आगत उन मुसलमानों के हक में नाजिल हुई जिन्होंने अर्ज किया कि क्या हम आपको सजदा करें।

तफसीरे नौशापुरी में भी इस की ताईद की गई है

आलाहजरत इमाम अहमद रजा की तहकीक

आगत करीमा की तफसीर और शाने नुबूल के सिलसिले में आपने मुफर्रिसरीन के अकवाल मुलाहजा फरमाए। इन अकवाल की रीशनी में साबित हुआ कि गैरे खुदा को सजदा जाएज नहीं चाहे वह सय्यदे आत्म राल्लल्लाहु तआला अलैहि तसल्लम की जात ही क्यूं न हो हाँ आगत करीमा और इसकी तफसीर को सामने रखते हुए तीन बातें काबिले गौर हैं।

1 अगर इससे सजदए इबादत की हुरमत (यानि हराम होना) मुराद

ली जाए तो आयत करीमा के अलाफाज 'क्या तुम्हें क़ुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो' इसकी ताईद करते हैं लेकिन यह शाने नुज़ूल के खिलाफ है क्योंकि इसमें बताया गया है कि बाज सहाबा किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम ने सरकारे दो आलम राल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लग को सजदा करने की इजाजत चाही थी और किसी सहाबी के बारे में इस बात का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता है कि सहाबी हो कर क़ुफ़्र या शिर्क की इजाजत चाह रहे थे।
2 अगर इससे ताजीमी सजदे की हुरमत साबित हो जैसा कि शाने नुज़ूल से मालूम हो रहा है तो यह बात एतबार से सही नहीं कि यहाँ 'क्या तुम्हें क़ुफ़्र का हुक्म देगा' फरमाया गया और ताजीमी सजदा क़ुफ़्र नहीं लिहाजा ऐसा सजदा ग़राद होगा जो क़ुफ़्र व शिर्क की वजह (कारण) हो।

3 अगर इसका शाने नुज़ूल नज़रान के ईसाईयों का कौल हो कि हज़रते ईसा अलैहिरसलाम ने हमें हुक्म दिया कि हम उनको अपना सब मानें तो इससे यह स्पष्टी ताज़िम आती है कि 'क्या तुम्हें क़ुफ़्र का हुक्म देगा बाद इसके कि तुम मुसलमान हो' के मुताबिक उन ईसाईयों को मुसलमान मानना पड़ेगा हालाँकि यह सही नहीं।

इन तमाम बातों को सामने रखते हुए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुदिरा सिरुहू ने फरमाया

मैं (आलाहज़रत) अल्लाह तआला की तौफीक से कहता हूँ कि नज़रान के ईसाई मुसलमान न थे और यहाँ 'तुम मुसलमान हो' फरमाया गया है लिहाजा ईसाई ग़राद नहीं हैं। तो यहाँ तो माना यह लेने होंगे

“ایامر اباء کم الاولین بالکفر بعد اذ کانو مسلمین (پ ۲ع ۱۶)

(तर्जमा 'क्या हज़रते ईसा अलैहिरसलाम तुम्हारे अगले बाप दादाओं को जो उनके जमाने में दीने हक पर थे क़ुफ़्र का हुक्म करते बाद इसके कि ईमान ला चुके थे) और ख़िताबे गुरिलमीन पर क़ुफ़्र में ताज़ील की हाजत है कि मुसलमानों ने हरामिज सजदे इबादत न चाही।

पहली बात तो यह है कि यह न सहाबा से मन्कूल (नकल किया

हुआ) था कि रोजे अव्वल से हर एक के मुनाफिक (पक्ष करने वाला) मुखालिफ (तिरोधी) दूर का नजदीक का हर शख्स जानता और हर घर में घूँटा था कि एक अल्लाह की इबादत की तरफ बुलाते हैं और शिर्क के बराबर किसी चीज को दुश्मन नहीं रखते थे तो यह बात कैसे सोची जा सकती है कि कोई साहाबी नबी की इबादत की दरखास्त करेगा और वह भी खुद नबी से खुसूसन यह सजदे की दरखास्त करने वाले कौन थे वह आगे लए सहाबाए किराम हजरते मुआज्ज इब्ने जबल हजरते कैस इब्ने सअद व हजरत सलमान फारसी यहाँ तक कि हजरते साय्यदुना सिदिके अकबर रदीयल्लाहु तआला अन्हुम जैसा कि फरसने अहादीस में आता है।

दूसरी बात यह कि हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जजाब में यही फरमाया कि ऐसा न करो, यह न फरमाया कि तुम गैर की इबादत की दरखास्त करके काफिर हो गए, तुम्हारी औरते निकाह से निकल गई तौबा करो दोबारा इस्लाम लाओ फिर औरतें राजी हों तो उनसे निकाह करें।

तीसरी बात यह कि सबसे बढ़कर तो यह बात है कि अल्लाह तआला खुद इस आयत में उनको मुसलमान बता रहा है कि तुम मुसलमान हो क्या तुम्हें कुफ्र का हुकम दे।

यही वजह है कि इगाम मुहम्मद इब्ने मुहम्मद हाफि जुदीन कज़ीज में फरमाते हैं :-

अल्लाह तआला ने सहाबा किराम रदीयल्लाहु तआला अन्हुम से फरमाया क्या नबी तुम्हें कुफ्र का हुकम दे बाद इसके कि तुम मुसलमान हो यह आयत उस वक्त उतरी जब सहाबा किराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा करने की इजाजत दी और जाहिर है कि उन्होंने सजदा तहिय्यत की दरखास्त की थी इस दलील से कि फरमाया है बाद इसके कि तुम मुसलमान हो और सजदए इबादत जाएज मानकर मुसलमान नहीं रहता।

जब इससे सजदए इबादत मुराद नहीं बल्कि ताजीमी सजदा मुराद है तो लफ्ज कुफ्र इस्तेमाल करने की क्या वजह है जब कि सजदए तहिय्यत कुफ्र नहीं। इस बात का जजाब आलहजरत इमाम

अहमद रजा रहमतुल्लाह तआला अलैह यू देते हैं

मैं कहता हूँ कि बिऐनिही (हूँ ब हूँ) यही दलील रौशन कर रही है कि कुफ्र से कुफ्रे हकीकी (जो हकीकत में क़फ़्र हो) मुराद नहीं कि कुफ़्र हकीकी की दरख़ास्त करके भी मुसलमान नहीं रहता फिर क्यूँकर फरमाया जाता है कि इसके बाद कि तूम मुसलमान हो।

आलाहजरत आगे फरमाते हैं :-

इमाम खातिमुल हुमफज ने दोनों शाने बुजूल बराबर रखी और शक नहीं एक एक आयत के लिए कड़ कड़ शाने बुजूल होती है और कुरआने करीम अपने जगीअ बुजूह पर हुज्जत है याने तमाम बुजूह पर दलील है जैसा कि ताफ़सीरे कबीर शरहे मजाहिब जरकनी वगैराहमा में है तो कुरआने करीम ने साबित फरमाया सजदए तहिम्यत ऐसा सब्बा हराम है कि कुफ़्र का मुशाबेह है। अल अया नु बिल्लहि तआला।

सहाबए किराम ने हु नूर से सजदए तहिम्यत की इजाजत चाही इस पर इरशाद हुआ क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म दे। गालूम हुआ कि सजदए तहिम्यत ऐसी नबीह (ख़रा) चीज है जिसे कुफ़्र से ताबीर फरमाया जब खुद हु नूरे अक़दरा रोल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम के लिए सजदए तहिम्यत का हुक्म यह है फिर ओरो का जिक्र? अल्लाह हिदायत फरमाए।

आलाहजरत की इस तहकीक और खुदावाद कुव्वत की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम है क्यूँके आपने मुफ़रिसरीन किराम की इबास्त की तावील करके ताजेह फरमाया कि इससे सजदए इबादत मुराद लिया जाए तो इससे सहाबा किराम की जात तान व तशनीअ का निशाना बनती है और अगर सजदए तहिम्यत मुराद लिया जाए तो इसका हुक्म कुफ़्र नहीं लिहाना मतलब यही होगा कि सजदए तहिम्यत ही मुराद है लेकिन यह इतना अजीम जुर्म है कि उसे कुफ़्र के मुशाबेह करार दिया गया।

आलाहजरत ने सजदए इबादत और सजदए तहिम्यत में फर्क ताजेह करते हुए दोनों का हुक्म बयान फरमाया और जो लोग लाइली या किसी दूसरे सबब से सजदए तहिम्यत को भी शिक्र व कुफ़्र करार

देते हैं वह बहुत बड़ा जुर्म कर रहे हैं। आपने इसी की वजाहत करते हुए फरमाया

मुसलमान! ऐ मुसलमान!! शरीअते मुस्तफवी के ताबेअ फरमान! जान और यागिन जान कि सजदा अल्लाह तआला के सिवा किसी के लिए नहीं उसके गैर को सजदा इबादत तो यकीनन कुफ़रे गुहीन (बदतर कुफ़र व खुला कुफ़र) और राजदए ताहेय्यत हराम व गुनाहे कबीरा बिलयकीन। सजदए ताहेय्यत यानि ताजीमी सजदे के कुफ़र होने में इस्तेलाफ़ उलमाए दीन। फुकहा की एक जमाअत के कौल के मुताबिक कुफ़र। और तहकीक यह कि वह कुफ़रे सुपरी (जो जाहिर में कुफ़र हो हकीकत में नहीं यानि वह कुफ़र जो देखने में तो कुफ़र लगे मगर कुफ़र ही नहीं,) हाँ बुल या सलोब (सूती जैसे ईसाईयो के काम) या सूरज या ताँद वगैरह को राजदा पर कुफ़र का ही हुक्म है जैसा कि शरहे मताहब वगैरह किताबों में है।

इनके सिवा मिसले घोर व मजार के लिये हरगिज हरगिज न जाएज व मुबाह (जाइज) जैसा कि कुछ लोगों का झूठा दावा है न शिकं हकीकी है कि बरखश न जाएजा जैसा कि तहाबियों और दूसरे बदमजहब फिरतों की झूठी सोच है। हाँ बेशक हराम और बहुत बड़ा गुनाह है। पर अल्लाह तआला जिसे चाहे बरखश दे जिसे चाहे अजाब करे। शिकं व कुफ़र कहने वालों के लिए तो हजरते आदम अलैहिस्सलाम का वाकिआ दलील है कि अगर इसे शिकं माने तो आदम अलैहिस्सलाम को जो अल्लाह तआला ने सजदे का हुक्म फ़रिश्तों को दिया था तो क्या यह शिकं व कुफ़र था? हरगिज न, क्या अल्लाह ऐसा हुक्म दे सकता है बल्कि यह ताजीमी सजदा था। और जगहूर यानि सबके लिए यह दलील कि हजरते यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके तालिदेन और भाईयो ने सजदा किया जैसा कि कुरआन में है यह भी राजदए ताजीमी है मगर अब यह भी जाएज नहीं बल्कि हराम जैसा कि आगे हदीस में आएगा।

मुहाल है कि कभी अल्लाह तआला अपनी मखलूक को अपना शरीक करने का हुक्म दे अगरचे फिर उसे भी मन्सूख़ फरमाए और साथ ही यह भी मुहाल है कि फ़रिश्ते या कोई भी नबी एक आन के

लिए भी किसी को अल्लाह तआला का शरीक ठहराये।

नोट : यहाँ तक के मजमून से साफ जाहिर हुआ कि ऊपर गुजरी आयत में सजदए ताजीमी को हराम बताया गया है कुफ्र नहीं जबकि पहले सजदए ताजीमी जाए न था और इस आयत में सजदए इबादत मुराद नहीं है और सजदए इबादत तो गैरे खुदा को हमेशा से कुफ्र व शिर्क है और हमेशा कुफ्र व शिर्क रहेगा। इसके बाद भी किसी की समझ में बात न आ रही हो तो किसी सुन्नी सहोदुल अक़ीदा आलिम से और ताफ़सील के साथ समझ ले और स्वामरवाह किसी भोले मुसलमान पर कुफ्र पर शिर्क की तोहमत न लगाए अलबत्ता उसे समझा दे कि यह ताजीमी सजदा भी हराम और सख़ा हराम है और कुफ्र व शिर्क की तरह है।

अहादीसे मुबारका

आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा अलौहर्रहमा ने ताजीमी सजदे के हराम होने पर तालीस अहादीस मुबारका पेश की हैं। आपने तालीस अहादीस का इन्तेज़ाब इस बुनयाद पर किया है कि हदीस शरीफ में अरबईन (तालीस) की फ़कीहत आई है।

आपने हुसनी सजदा पर जिन आहदीस से इरिदादलाल (दलील पेश करना) किया है उन ही दो किस्में हैं। पहली किस्म की हदीसों में यह बताया गया है कि गैरे खुदा को सजदा मुतलकन मना है और दूसरी किस्म की हदीसों में कब्र की तरफ़ सजदा करने को मना किया गया है।

पहली किस्म की अहादीस

हदीस न 1 :- हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरती है एक औरत ने बारागाहे रिसालत मआब अलौहिरसलातु तत्ताहिyyा में हाज़िर होकर अर्ज किया या रसूलुल्लाह! शौहर का क्या हक़ है? आपने फरमाया अगर किसी बशर (इन्सान) को लाएक होता कि वह दूसरे बशर को सजदा करे तो मैं औरत को हुक्म देता कि जब शौहर घर में आए तो उसे सजदा करे क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे इस पर

फजीलत दी है।

इमाम तिमिजी ने मरफूअ हदीस में रिवायत किया कि अगर मैं किसी को हुक्म देता कि किसी (दूसरे) को सजदा करे तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने खातिन्द (शोहर) को सजदा करे। **हदीस न. 2** — हजरते अबू हुसैफ रदीयल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम एक बाग में तशरीफ ले गए तो एक ऊँट ने आकर आपको सजदा किया, सहाबए किराम ने आकर अर्ज किया कि यह बेअकल तोपाया है इसने आपको सजदा किया हालांकि हम अकल स्वतः हैं तो हमें इस बात का ज्यादा हक पहुँचता है कि आपको सजदा करे। (इस पर) नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी इन्सान के लिये दूसरे इन्सान को सजदा करना जाएज नहीं अगर यह बात जाएज होती तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने खातिन्द के हक के सबब जो उसके जिम्मे है सजदा करे।

हदीस न. 3 — हजरते अनस रदीयल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं एक अन्सारी घराने का ऊँट था जिस पर वह आब करी करत थे वह बिगड़ गया (आगे चाले का जिक्र आता है) पस जब ऊँट ने रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा तो आपके सामने सजदा रेत हो गया। सहाबा किराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! वह बेअकल जानवर आपको सजदा करता है और हम तो अकलमन्द हैं लिहाजा हमें इस बात का ज्यादा हक है कि आपको सजदा करे। आपने फरमाया किसी इन्सान को जाएज नहीं कि किसी दूसरे इन्सान को सजदा करे अगर यह बात जाएज होती तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह खातिन्द के अजीम (बड़) हक के पेशे नजर उसे सजदा करे।

इमाम मुन्जरी फरमाते हैं इस हदीस की सनद जय्यद और सवी सिकह मशहूर है।

हदीस न. 4 — हजरते अनस रदीयल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अन्सार के एक बाग में दाखिल हुये आपके साथ हजरते अबू बक्र सिद्दीक, हजरते उमर फारुक (रदीयल्लाहु तआला अन्हुमा) और कुछ अन्सार रदीयल्लाहु

तआला अन्हुम भी थे बाग में कुछ बकरियाँ थीं जिन्होंने आप को सजदा किया। हजरते अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह! इन बकरियों की निसबत हम आपको सजदा करने का ज्यादा हक रखते हैं। नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी उमात में किसी के लिए जाएज नहीं कि वह किसी को सजदा करे अगर किसी के लिए किसी को सजदा करना जाएज होना तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने खातिन्द को सजदा करे। हजरते मुल्ला अली करी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने शरहे शिफा इगाम काजी अगात्र ने फरमाया कि इसकी सनद सही है।

हदीस न 5 — हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफा रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हम रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सिद्मत में बैठे हुये थे कि एक आने वाला आया और अर्ज किया या रसूलुल्लाह फर्मा न बोलने का आब कशी (पानी लाना) का ऊँट भाग गया (ये सुन कर) सरकारे दो आत्म सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उठ राखे हुये हम भी आप के साथ उठे हमने अर्ज किया या रसूलुल्लाह इस ऊँट के करीब न जाये हमें खर है कि आपको अजीयत (तकलीफ) पहुँचाए। तूर्माते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ऊँट के करीब हो गए ऊँट आपको देखते ही सजदा रोज हो गया फिर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना दस्त मुबारक (हाथ) ऊँट के सर पर रखा और फरमाया लोहा लाओ जब लोहा लाया गया तो आपने उसके सर में रख दिया। रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऊँट के मालिक को मेरी तरफ बुलाओ जब वह बुलाया गया तो आपने फरमाया यह ऊँट तुम्हारा है? उसने अर्ज किया जी हाँ आपने फरमाया इसे चारा अच्छी तरह दो और इस पर काम में सख्ती न करो। उसने अर्ज किया ऐसा ही करूँगा। हजरते इब्ने अबी औफा रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं सहाबए किराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! एक जानवर आपके हक की अजमत के पेशे नज़र आपको सजदा करता है तो हमें आपको सजदा करने का ज्यादा हक

है। रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर मैं अपनी उम्मत में से किसी को हुक्म देता कि वह एक दूसरे को सजदा करे तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने स्वाजिन्दो (शोहरों) को सजदा करें।

हदीस न. 6 :- हजरते याअला इब्ने गुरह रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं एक दिन नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम (बाहर) तशरीफ लाए तो एक ऊट बोलता हुआ आया यहाँ तक कि उसने आपको सजदा किया तो मुसलमानों ने अर्ज किया हमें रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा करने का ज्यादा हक है (इस पर) आपने फरमाया अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वह किसी शख्स को सजदा करे तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने स्वाजिन्द को सजदा करे। मतालिउल मसरूत में है कि इस हदीस की सनद सही है।

हदीस न. 7 :- हजरते आइशा रिदीका रदियल्लाहु तआला अन्हा से मरती है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुहम्मिदीन व अन्सार की एक जमाअत में तशरीफ पाया तो एक ऊट ने आकर आपको सजदा किया। इस पर साहाबाए किराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह आपको जानवर और दरख्त सजदा करते हैं तो हमें ज्यादा हक है कि आपको सजदा करे। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपने स्व की इबादत करो और अपने भाई (रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की इजाजत करो और अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वह किसी को सजदा करे तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने स्वाजिन्द को सजदा करे।

हदीस न. 8 :- हजरते सअलबा इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरती है बन्ू सलगा के एक आदमी ने अपने काम काज के लिए ऊट खरीदा फिर उसे बाड़े में दाखिल किया, लादने का वक्त आया तो जो शख्स भी उसके पास जाता वह हमला कर देता। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए तो आप से (माजरा) जिक्र किया गया आपने फरमाया उससे (दरवाजा) खोल दो।

उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हमें डर है कि यह आपको नुकसान पहुँचाए आपने फरमाया इसे आजाद करो। चूनावे उन्होंने खोल दिया जब ऊँट ने आपको देखा तो सजदे में गिर गया, इस पर कौम ने अल्लाह तआला की तरबीह बयान की यानि पाकी बयान की और अर्ज किया या रसूलुल्लाह! इस जानवर की निसबत हमें ज्यादा हक पहुँचता है कि आपको सजदा करे। आपने फरमाया अगर मगलूक के लिए अल्लाह तआला के सिवा किसी को सजदा करना जाए न होता तो औरत के लिए अपने खाकिद को सजदा करना जाए न होता।

हदीस न 9 :- हजारों मीलान इब्ने सलमान साफ़ी रदियल्लाहु तआला अन्ह से मरती है फरमाते हैं कि हम एक सफर में नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हमराह गए तो हमने एक अजीब बात देखी, हम चलते चलते एक मण्डिल पर उतरे तो एक शख्स ने हाजिर होकर अर्ज किया ऐ अल्लाह के नबी! मेरा एक बाग है जो मेरा और मेरे अहलौ अयाल (परिवार) का जरिये मआश है यानि रोजी रोटी का जरिया है, उसमें मेरे पानी लाने वाले दो ऊँट थे जो मरत हो गए और उन्होंने मुझे बाग में जाने से रोक दिया है, हममें से उनके करीब कोई नहीं जा सकता। नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने सहाबए किराम के साथ उठ खड़े हुए, हत्ताफे बाग में तशरीफ लाए और बाग के मालिक से फरमाया (दरवाजा) खोलो। उसने अर्ज किया हुजूर इनका मामला बहुत सरल है। आपने फरमाया खोलो। जब उसने दरवाजे को हस्तता दी तो वह दोनों ऊँट हल्की फुल्की हवा की तरह उसकी तरफ मुलज्जो हुए जब दरवाजा खुला और उन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा तो बैठ गए फिर आपको सजदा किया नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनके सर को पकड़ कर उनके मालिक के हवाले कर दिया और फरमाया इन से काम लो लेकिन बारा अच्छी तरह दो। सहाबए किराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह आपको जानवर सजदा करते हैं हालांकि अल्लाह तआला ने आपके जरिये हमें बहुत अच्छा इनाम दिया कि गुमराही से हिदायत आता फरमाई और आपके वसीले से हलाकतो से बचाया क्या आप हमें

इजाजत नहीं देते कि हम आपको सजदा करे। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुझे सजदे का हक हासिल नहीं है, सजदा तो उस जात को होगा जो जिन्दा है और कभी नहीं मरेगा और अगर मैं इस उमात में से किसी के लिए किसी को सजदे की इजाजत का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने खाविन्द को सजदा करे।

हदीस न. 10 :- हजरते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुगा से गरवी है एक अन्सारी के दो ऊंट थे जो मस्त हो गए। उन्होंने उनको बाग में दाखिल करके दरवाजा बन्द कर दिया फिर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सिदमत में हाजिर हो गए ताकि आप उनके लिए दुआ फरमाये। नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा थे और आपके साथ कुछ अन्सार और सहाबाए किराम भी थे। उन्होंने अर्ज किया है अल्लाह के नबी! मैं एक हाजत लेकर हाजिर हुआ हूँ मेरे दो ऊंट मस्त हो गए हैं। मैंने उनको बाग में दाखिल करके दरवाजा बन्द कर दिया है मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए दुआ फरमाये कि अल्लाह तआला उन्हें मेरे काबू में दे दे। नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सहाबाए किराम से फरमाया हमारे साथ उठो फिर आप तशरीफ ले गए यहाँ तक कि दरवाजे के पास पहुँचे तो फरमाया खोलो। उसने दरवाजा खोला। एक ऊंट दरवाजे के करीब था उसने हुजूर को देखते ही आपको सजदा किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कोई चीज लाओ जिसके साथ मैं इसका सर बाध कर तुम्हारे कट्रोल में दे दूँ। वह एक लगाम लाया आपने उसका सर बाध दिया फिर दीवार की आखिरी जानेब दूसरे ऊंट की तरफ तशरीफ ले गए। जब ऊंट ने आपको देखा तो सजदा रोज हो गया। आपने उस शख्स से फरमाया कोई चीज लाओ जिसके साथ मैं उसका सर बाधूँ फिर आपने उसका सर बाध कर उस शख्स के कब्जे में दे दिया। फरमाया जाओ यह तुम्हारी नाफरमानी नहीं करेगे। जब सहाबाए किराम ने यह बात देखी तो हजरत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! ये दो ऊंट

गैर आफिल (बिअकल) है उन्होंने आपको सजदा किया तो क्या हम आपको सजदा न करे आपने फरमाया अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वह किसी दूसरे को सजदा करे तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने खातिन्द को सजदा करे।

हदीस न. 11 — हजस्ते जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं एक सफर में नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ गया और आप कजाए हाजत के लिए किसी पोशीदा मकाम की तरफ तशरीफ ले जाते पस दिखार्ह न देते हम एक खुले मैदान की तरफ उतरे जहाँ कोई दरख्त और आड वगैरह न थी। आपने फरमाया ऐ जाबिर अपने बर्तन में पानी डाल लो और हमारे साथ चलो। फरमाते हैं हम चले हत्ताके नजरो से ओझल हो गए वहाँ दो दरख्त थे जिनके दरमियान दो हाथ का फासला था। आपने फरमाया ऐ जाबिर उस दरख्त के पास जाकर कहो कि दूसरे दरख्त के साथ मिल जाए ताकि मैं उन दोनों के पीछे बैठ जाऊँ। बुनाते वह उस दरख्त की तरफ गया और रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दोनों के पीछे बैठे फिर (दरख्त) अपने अपने मकाम की तरफ लौट गए। हम सवार हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमारे दरमियान थे गोया हमारे सरो पर पारुन्दे साया किए हुये थे। आपके सामने एक औरत पेश की गई जिसके साथ एक बच्चा था उसने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरे इस बच्चे पर शैतान रोजाना तीन बार हमला करता है। आपने फरमाया बच्चा मुझे दो। बुनाते आपने उसे अपने और कजाते के दरमियान रखा और फरमाया ऐ अल्लाह के दुश्मन दूर हो जाओ मैं अल्लाह का रसूल हूँ तीन बार फरमाया फिर बच्चा उस औरत को दे दिया। जब हम सफर मुकम्मल कर चुके और फिर वहाँ से गुजरे तो औरत पेश की गई उसके साथ उसका बच्चा और दो मेढे थे जिन्हे वह चला रही थी। उसने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरी तरफ से यह हदया (तोहफा) कबूल फरमाये, उस जात की कसम जिसने आपको हक के साथ भेजा वह (शैतान) फिर नहीं लौटा। रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक मेढा ले लो और दूसरे उसे लौटा दो। हजस्ते जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु

फरमाते हैं फिर हम चले और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमारे दरमियान थे गोया हमारे सरो पर परिन्दे साया किये हुये थे। अचानक एक छूटा हुआ टैंट आ गया जब वह दोनों कतारों के दरमियान हुआ तो सजदा रोज हो गया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा हुये तो फरमाया इसका मालिक को हाजिर करो। तुम्हारे कुछ अन्सारी नौजवान हाजिर हुये उन्होंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! यह हमारा है। आपने फरमाया इसका क्या मांगला है। उन्होंने फरमाया इस पर हम बीस साल से आबकशो (पानी लाना) करते हैं यह मोटा ताजा वस्ती वाला है हम इसे ज़िबह करके बच्चों में तकरीम करना चाहते थे तो हमसे छूट गया। आपने फरमाया इसे मुझे देवो। उन्होंने कहा नहीं बल्कि वह आपकी खिदमत में पेश करते हैं। आपने फरमाया अच्छा ऐसा नहीं तो इससे अच्छा सुलूक करो यहाँ तक कि इसे मीत आ जाए। इस नका मुरालमानो ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! इन खानाबोशों की निसबत हमें ज्यादा हक पहुँचता है कि आपको सजदा करे। आपने फरमाया किसी को जाएज नहीं किसी को राजदा करे और अगर ऐसा होता तो औरसे खादिन्दो को सजदा करती। — इमाम जलालुद्दीन सिगूदी रहिमतुल्लाहि (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) ने मनाहिल में फरमाया कि इसकी सनद सही है — इमाम कुरतुबानी रहिमतुल्लाहि ने मताहिबे लदुन्निया में और अल्लामा फासी ने मतालिउल मसारीत में फरमाया कि इसकी सनद जय्यद है — अल्लामा जस्कानी ने फरमाया इसके तमाम शर्तों सिकह हैं यानि लाइके भरोसा है।

हदीस न. 12 :- हज़रत इब्ने बुरैदह अपने जालिद (रदियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत करते हैं कि एक आराबी (जंगल में रहने वाला) ने बारगाहे नबवी में हाजिर होकर अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मैं इस्लाम ला चुका हूँ मुझे ऐसी चीज दिखाये जिससे मेरे यकीन में इजाफा हो जाए। आपने फरमाया तुम क्या चाहते हो। उसने अर्ज किया उस दरख्त को बुलाये कि वह आपकी खिदमत में हाजिर हो। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसके पास जाओ और कहो कि तुम्हें अल्लाह का रसूल बुलाता है।

आराबी ने दरख्त के पास जाकर कहा तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम याद फरमाते हैं। राती कहते हैं वह एक तरफ को झुका कि अगर के रेशे टूट गए फिर दूसरी जानिब झुका तो उस तरफ के रेशे टूट गए वह बारगाने नबवी में हाजिर हुआ और अर्ज किया 'अस्सलामु अलैका या रसूलुल्लाह (ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम हो) आराबी ने कहा मुझे काफ़ी है (दो बार कहा) आपने दरख्त से फरमाया वापस चले जाओ। घुनावे वह वापस चला गया और अपनी जड़ों पर शायबो समेत खड़ा हो गया। आराबी ने अर्ज किया हुजूर! मुझे इजाजत दे कि आपके सरे गुबारक और पातों को बीसा (चूगना) दूँ, आपने इजाजत दे दी। फिर अर्ज किया मुझे इजाजत मरहमत फरमाये कि आपको सजदा करूँ। आपने फरमाया कोई शय्य किसी दूसरे को सजदा न करे अगर मैं किसी को किसी के लिए सजदे की इजाजत देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शीहर के हक की बिना पर उसको सजदा करे। इमाम हाफ़िज़ ने फरमाया यह हदीस सही है।

हदीस न. 13 :- हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अबी ओफा रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हजरते मुआज रदियल्लाहु तआला अन्हु शाम से वापस आए तो उन्होंने सरकारे दो आलम रसल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा किया आपने फरमाया ऐ मुआज यह क्या है? उन्होंने अर्ज किया मैं शाम (मुत्क का नाम) में गया तो उन लोगों को देखा कि अपने पादरियों और सरदारों को सजदा करते हैं तो मेरे दिल ने चाहा कि हम हुजूर को सजदा करें। आपने फरमाया ऐसा न करो अगर मैं किसी गैरे खुदा के लिए सजदे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने स्वातिन्द को सजदा करे। इस हदीस को इब्ने अबी हब्बान ने अपनी सही में रितायत किया और मुन्जिरी ने इसके रवालेह होने की तरफ इशारा किया।

हदीस न. 14 :- हजरते मुआज इब्ने जबल रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं वह शाम (मुत्क का नाम) में गए तो उन्होंने ईसाइयों को देखा कि वह अपने पादरियों और फकीरों को और यहूदी अपने आलिमों और आबिदों को सजदा करते हैं, उन्होंने फरमाया तुम ऐसा

क्यूँ करते हो। उन्होंने कहा अम्बियाए किराम की ताजीम के लिए। मैं ने कहा हमें ज्यादा हक है कि अपने नबी के साथ यह अमल करें तो सरकारें दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया इन लोगों ने अपने अम्बियाए किराम पर झूट बोला जैसे उन्होंने अपनी किताब बदल दी अगर मैं किसी को किसी के लिए सजदे का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता हक वह अपने शोहर के अजीम हक के पेशे नजर उसे सजदा करे।

हदीस न. 15 :- हजरते मुआज इब्ने जबल रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि वह यमन से वापस आए तो अर्ज की या रसूलुल्लाह! मैंने यमन में कूछ लोगों को देखा कि वह एक दूसरे को सजदा करते हैं क्या हम आपको सजदा करें। सरकारें दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अगर मैं किसी इन्सान को हुक्म देता कि वह किसी दूसरे इन्सान को सजदा करे तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने राजिन्द को सजदा करे।

आलाहजरत इमाम अहमद रजा क़दिय्या सिरूहू फरमाते हैं यह हदीस सही है और इसके सब बातों सही बुन्कारी व मुस्लिम के सांयोगों में से है तो जब यह दोनों हदीसे सही हैं तो य मीनन यह दो वाक्यो हैं पहली बार शाम में यहूद व नसारा (ईसाई) को देखा कि आए और हुजुरे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा किया।

जिस पर मुमानअत (गना करना) फरमाई दोबारा यमन वाली को देख कर आए अब अपने मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदे के कमाले शौक में या तो पहला वाकिया जहन्न से उतर गया या इस वजह से कि यह यहूद व नसारा की मुन्वालाफत की वजह से सरकारें दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आखरी अमल था, नहीं (रोकना) का एहतिमाल समझा और सजदा किया सिर्फ इजाजत चाही तो मुमानअत फरमाई गई। वल्लाह तआला आलम बिरसवाब।

हदीस न. 16 :- हजरते कौस इब्ने सअद रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं हैरह (जगह का नाम) में गया तो उन लोगों को देखा कि अपने शहस्यार (बादशाह) को सजदा करते हैं मैंने सोचा रसूलु अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस बात के ज्यादा मुस्तहिक (हकदार) हैं। चुनावे हाजिरे खिदमत होकर अर्ज किया कि मैं हैरत गया तो वहाँ के लोग अपने शहरवार को सजदा करते हैं तो या रसूलुल्लाहु आप इस बात का ज्यादा हक रखते हैं कि आप को सजदा किया जाए। नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बताओ अगर तुम मेरी कब्र के पास से गुजरो तो उसे भी सजदा करोगे मैंने अर्ज किया नहीं। आपने फरमाया तो ऐसा न करो अगर मैं किसी को हुक्म देता कि वह किसी दूसरे को सजदा करे तो औरतो को हुक्म देता कि वह अपने शीहर को सजदा करे क्योंकि उनका उन औरतों पर हक है।

इमाम अबू दाऊद ने इस हदीस को सक्तून (रामोशी इस्त्रागार करते हुए) हसन कहा और इमाम हाकिम ने ताराहीन (माजेह तीर पर) कहा कि यह हदीस सहीह है इमाम जहबी ने इसे मुकर्रर रखा।

हदीस न. 17-21 :- इन अहादीस में हजरते मुबारक इब्ने जौद इब्ने अरकम सुराकह इब्ने गालिक इब्ने उमर रदीयल्लाहु तआला अन्हुम ने रिवायत किया है। रसूलो अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

अगर मुझे किसी को किसी के लिए सजदे का हुक्म देना होता तो औरत को फरमाता कि वह अपने शीहर को सजदा करे।

हदीस न. 22 :- हजरते इमाम हसन बसरी रदीयल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत जिसका आयते करीमा के शाने नुजूल में जिक्र हुआ कि एक सहाबी ने सजदे को इजाजत मागी तो आयते करीमा उतरी।

आलाहजरत इमाम अहमद रजा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने इस के जैल में (यानि इसके तहत) ताफसीरे मदारकि के हवाले से हजरते सलमान रदीयल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत नकल की है कि अन्होने रसूलो अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदा करना चाहा तो आपने फरमाया मग्वलूक के लिए अल्लाह तआला के सिवा किसी को सजदा करना जाएज नहीं।

ताजीमी सजदा जाएज था फिर मन्सूख हो गया क्योंकि जब हजरते सलमान रदीयल्लाहु अन्हु ने सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु

तआला अल्लैहि वसल्लम को सजदा करने का इरादा किया तो आपने फरमाया मखलूक के लिए अल्लाह तआला के सिवा किसी को सजदा करने की इजाजत नहीं।

बीज उन्होंने तफसीरे कबीर के हवाले से इमाम सुफयान सौरी रदियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत के हवाले से नकल किया कि हजरते अली कर्म्मल्लाहु वज्जहू ने नसारा के सफ़ीर को इस बात से रोक दिया कि वह आपको सजदा करे।

तफसीरे कबीर में यूँ है

हजरते सौरी हजरते सम्माक इब्ने हानी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि नसारा का सफ़ीर हजरते अली मुर्तजा रदियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में हाजिर हुआ तो उराने आप को सजदा करना ताहा आपने फरमाया अल्लाह तआला को सजदा करो मुझे सजदा न करो।

हदीस न. 23 — हजरते अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरती है एक शख्स ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हमारे से कोई शख्स अपने भाई या दोस्त से मुलाकात करता है तो क्या वह उसके लिए झुकें आप ने फरमाया नहीं।

इमाम तहवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कुछ मुख्तलिफ अलफाज से इसी मफहूम की हदीस नकल की है

हजरते अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरती है सहबए किराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! क्या मुलाकात के वक्त हम एक दूसरे के लिए झुक सकते हैं। आपने फरमाया नहीं।

दूसरी किस्म की अहादीस

अब यहाँ पर तो हदीसे पेश हैं जिन में कब्र की तरफ सजदा करने की मुमानअत आई है।

हदीस न. 24 — हजरते अबू मरसद गननी रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया न कब्रों पर बैठो और न उनकी तरफ रुख करके नमाज पढ़ो।

हदीस न. 25 — हजरते अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुगा से मरती है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

ने फरमाया न कब्र की तरफ मुँह करके नमाज पढ़ो और न कब्र के ऊपर नमाज पढ़ो।

हदीस न. 26 :- हजरते अनस रदियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कब्रों की तरफ रुख करके नमाज पढ़ने से मना फरमाया। ——— अल्लामा मनावी ने फरमाया कि इस हदीस की सनद सही है।

हदीस न. 27 :- हजरते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया सूनो! तुम में कोई हरगिज किसी दूसरे शख्स या कब्र की तरफ रुख करके नमाज न पढ़े।

हदीस न. 28 :- हजरते अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है फरमाते हैं हजरते उमर फारुक रदियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझे एक कब्र की तरफ नमाज पढ़ते हुए देखा तो फरमाया तुम्हारे सामने कब्र है। चुनांचे आपने मुझे रोक दिया। हजरते वकीइ की रिवायत में है कि मुझे फरमाया कब्र की तरफ नमाज न पढ़ो और फजल इब्ने दकीन की रिवायत में है कि उन्होंने मुझे आवाज दी (सामने) कब्र है। चुनांचे वह आगे बढ़े और कब्र से तजावुज करके यानि हट कर नमाज अदा की।

हदीस न. 29 :- हजरते आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने मर्जे वफात में फरमाया यहूद व नसारा पर अल्लाह तआला की लानत हो उन्होंने अपने अम्बियाए किराम की कब्रों को महल्ले सजदा (सजदे की जगह) बना लिया अगर यह बात न होती तो सैजए मुतहहिरा को खोल दिया जाता मगर अन्देशा हुआ कि कहीं सजदा न होने लगे लिहाजा मुखफी (छुपा हुआ) रखा गया है।

एक रिवायत में है आपने फरमाया (यहूद व नसारा) कयामत के दिन अल्लाह तआला के यहाँ बदतरीन मखलूक होंगे।

हदीस न. 30 :- हजरते अबू हुरैरह रदियल्लाहु तआला अनहु से मरवी है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला यहूद व नसारा को हलाक करे उन्होंने अपने अम्बियाए किराम की कब्रों को सजदागाह बना लिया।

हदीस न. 31 :- हजरते आइशा और हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुम फरमाते हैं रुहे अकदस के नजअ के वक्त सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम चादर मुबारक रू-ए-अनवर पर डाल लेते अब नागवारी होती तो हटा देते, इसी हालत में फरमाया अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत भेजे उन्होंने अपने अम्बियाए किराम की कब्रों को सजदागाह बना लिया आपने (अपने मजारे मुबारक के साथ) ऐसा अमल करने से डराया।

हदीस न. 32 :- हजरते अली करमल्लाहु वजहहुल करीम फरमाते हैं रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मर्जे विसाल में मुझे फरमाया लोगों को मेरे पास हाजिर होने की इजाजत दो, चुनांचे मैंने लोगों को इजाजत दी। आपने फरमाया उस कौम पर अल्लाह तआला की लानत हो जिन्होंने अपने अम्बियाए किराम की कब्रों को सजदागाह बना लिया। फिर आप पर गशी तारी हो गई जब इफाका हुआ तब फरमाया ऐ अली! लोगों को मेरे पास बुलाओ। मैंने लोगों को बुलाया तो आपने फरमाया अल्लाह तआला की लानत हो उस कौम पर जिन्होंने अपने अम्बियाए किराम की कब्रों को सजदागाह बना लिया। (तीन मरतबा इसी तरह हुआ। तीसरी बार इफाके पर भी आपने यही बात फरमाई यह मर्जे विसाल का वाकिआ है)

हदीस न. 33 :- हजरते उसामा इब्ने जैद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मर्जे विसाल में फरमाया मेरे सहाबाए किराम को मेरे पास लाओ वो दाखिल हुए तो आपने मआफरी चादर (चादर का नाम) से चेहरा ढापा हुआ था। आपने पर्दा हटाया और फरमाया अल्लाह तआला यहूद व नसारा पर लानत भेजे उन्होंने अपने अम्बिया अलैहिमुससलाम की कब्रों को सजदागाह बना लिया।

हदीस न. 34 :- हजरते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना आपने फरमाया बदतरीन लोग वह हैं जो कयामत कायम होने के वक्त जिन्दा होंगे और जिन्होंने कब्रों को सजदागाह बना लिया।

हदीस न. 35 :- हजरते अली करमल्लाहु वजहहुल करीम से मरवी

है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बदतरीन लोगों में से हैं वो जो कब्रों को सजदागाह बनाते हैं।

हदीस न. 36, 37 :- सही मुस्लिम में इब्ने जुन्दुब रदियल्लाहु तआला अन्हु से और मोजम तबरानी में हजरते कअब इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है फरमाते हैं :-

मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के विसाल से पांच दिन पहले आप से सुना आप फरमाते थे सुनो! तुम से पहले लोग अपने अम्बियाए किराम और बुजुर्गों की कब्रों को सजदागाह बनाते थे, खबरदार! तुम कब्रों को जाए सजदा न बनाना, मैं तुम्हें इससे रोकता हूँ।

हदीस न. 38 :- हजरते अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यूँ दुआ फरमाई।

या अल्लाह! मेरी कब्रे अनवर को बुत न होने देना उस कौम पर अल्लाह तआला की लानत हो जिसने अपने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की कब्रों को सजदागाह बनाया।

हदीस न. 39 :- हजरते अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस कौम पर अल्लाह तआला का सख्त गजब हुआ जिन्होंने अपने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की कब्रों को सजदागाह बना लिया।

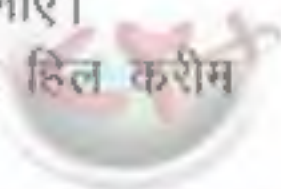
हदीस न. 40 :- हजरते अग्र इब्ने दीनार रदियल्लाहु तआला अन्हु से कब्रों के दरमियान नमाज पढ़ने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया मुझे बताया गया है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया बनी इसराईल अपने अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की कब्रों को सजदागाह बनाते थे तो अल्लाह तआला ने उन पर लानत फरमाई।

नोट :- इन अहादीस से साबित हुआ कि अल्लाह तआला और हुजूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हरगिज हरगिज यह पसन्द नहीं करते थे कि कोई हुजूर की कब्र को सजदा करे बल्कि ऐसे शख्स पर अल्लाह की लानत है तो जब हुजूर की कब्र को सजदे का

यह हुक्म है तो किसी और की कब्र को सजदे का कितना सख्त हुक्म होगा। इसी तरह किसी पीर वगैरह को भी सजदा बिला शक व शुबह हराम और सख्त हराम है। — सजदए ताजीमी का यह हुक्म है सजदए इबादत हमेशा से कुफ्र व शिर्क है और हमेशा कुफ्र व शिर्क रहेगा।

इन तमाम दलाइल के बाद यह बातें वाजेह तौर से सामने आई कि आलाहजरत न तो सजदए ताजीमी के काएल हैं और न इस जैसी किसी बिदअते सइइआ (बुरी नई बिदअत यानि बुरा नया काम) को पसन्द करते बल्कि आपने उन तमाम बिदआत को जो दीन में शामिल होती रही हैं उनकी सख्ती से मुखालफत की है और भरपूर तरीके से उनका रद्द किया है और दीन की हर सम्त में तजदीदी कारनामे अन्जाम दिए हैं। अल्लाह तआला हमको तमाम बिदआत सइइआ से बचने की तौफीक अता फरमाए।

आमीन बिजाहे नबीए हिल करीम



JANNATI KAUN?